संसद भवन परिसर में भारतीय वन सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों से संवाद

भारतीय वन सेवा के ट्रेनिंग ऑफिसर्स का मैं अभिनंदन करता हूं, स्वागत करता हूँ। आप सभी जानते हैं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। विविधता वाला हमारा देश, विविध संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, खान-पान और सभी धर्मों को समान रूप से मानने वाला दुनिया के अंदर भारत एकमात्र लोकतांत्रिक देश है। दुनिया में सबसे बड़ा संविधान भारत का है। भारत की जनता का संविधान पर विश्वास, भरोसा और संविधान में भारत के हर व्यक्ति की संप्रभुता का अधिकार, समानता का अधिकार, न्याय का अधिकार, ये हमारे लोकतंत्र की विशेषताएं हैं। इसलिए हर व्यक्ति की अभिव्यक्ति का अधिकार और जनता के द्वारा जनता का शासन, ये हमारे संविधान की विशेषताएं हैं। जब आप इस लोकतांत्रिक देश में भारतीय वन सेवा अधिकारी के रूप में अपना कार्य करेंगे, तो निश्चित रूप से भारत की विविधताएं, हमारी प्राचीनतम संस्कृति और किस तरीके से भारत के अंदर जैव-विविधता से लेकर, पशु की पूजा करना हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है, पेड़ की पूजा करना हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। इसलिए आध्यात्मिक रूप से भी और हमारी संस्कृति में भी वन संरक्षण करना हमेशा हमारी नैतिकता रही है। वनों को बनाना, वनों के आधार पर पर्यावरण का संरक्षण करना, जीवों की सुरक्षा करना, जंगलों के अंदर जंगली जानवरों की सुरक्षा करना, कहीं न कहीं हमारी प्राचीनतम संस्कृति का हिस्सा रहा है।

दुनिया के अंदर जलवायु परिवर्तन एक चुनौती बन चुका है। भारत ने हमेशा हमारी संस्कृति, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन का विशेष ध्यान रखा है, लेकिन वह समय भी आया, जब विकसित देशों के भौतिक संसाधनों की अत्यधिक प्राप्ति के कारण तथा नई औद्योगिक क्रांति लाने के कारण कहीं न कहीं भारत के अंदर भी इसका प्रभाव पड़ा और इसलिए भारत ने जलवायु परिवर्तन के लिए विशेष चिंता व्यक्त की है। भारत के प्रधान मंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने पर्यावरण और जलवायु

परिवर्तन के लिए हर सेमिनार के अंदर भारत को अग्रिम पंक्ति में रखकर नेतृत्व किया है तथा देश के अंदर किस तरीके से हम पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और जैव संरक्षण के लिए प्राचीनतम काम करते चलें, यह बताया है। उन्होंने कहा है कि व्यक्ति के जीवन जीने की शैली में यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसलिए आज इस वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अंदर भी जलवायु परिवर्तन विषय पर भारत नेतृत्व कर रहा है।

भारत की संसद ने भी कई इंटरनेशनल फोरम्स पर जो हमारी चर्चा हुई, संवाद हुए और जिस तरीके से पूरी संसद ने सामूहिकता के साथ पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विषय पर चिंता व्यक्त की और यह स्वीकार किया कि सामूहिकता के साथ हमारी लाइफ-स्टाइल के अंदर जलवायु परिवर्तन का मुद्दा हमारी सोच का हिस्सा होना चाहिए, इसके लिए संकल्प भी लिया। हमें सामूहिकता की शक्ति के साथ काम करना है और इसके लिए हम कटिबद्ध हैं। यह भारत की संसद ने संकल्प लिया है।

ये चीजें हमने इंटरनेशनल फोरम पर भी बताईं कि किस तरीके से भारत ने पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के विषय को लेकर दोनों सदनों में, लोक सभा और राज्य सभा में काफी लंबी चर्चा की गई। सभी माननीय सदस्यों के विचारों से संसद और सरकार अवगत हुई, ताकि हमारी कार्य-योजना और नीति ऐसी बने, जिससे हम पर्यावरण को संरक्षित कर सकें, जलवायु परिवर्तन को ठीक से मेंटेन कर सकें। इसके साथ-साथ विशेष रूप से हम वनों का संरक्षण कर सकें। आप देख रहे होंगे कि सामाजिक रूप से भी वन संरक्षण के लिए पेड़ लगाने हेतु जन-आंदोलन खड़ा हो चुका है।

कई लोगों ने इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाया है। आने वाले समय के अंदर जिस तरीके का यह आन्दोलन बनता जा रहा है, हम अपने 23 परसेंट से ज्यादा इलाकों के अंदर अपने जंगल को बचा सकें और जंगल के एरिया को बढ़ा सकें, इसके लिए व्यापक रूप से काम चल रहा है। आप लोग संसद में आए हैं, तो संसद के अंदर वन, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन आदि विषयों पर जो भी डिबेट हुई है, चर्चा हुई है, आप उसका अध्ययन करेंगे। जो नीतियाँ, पॉलिसी इस संबंध में बनी हैं, उनका अध्ययन

करेंगे। इस संबंध में जो कानून बने हैं, उनका अध्ययन करेंगे। भारत के अंदर इसको लेकर बहुत पहले से, वर्ष 1864 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने इम्पीरियल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट की शुरूआत की थी। आप देखें कि संसद में हमारे पास वर्ष 1860 से रिकॉर्ड उपलब्ध है। उस समय किस विचार से इस विभाग की शुरूआत हुई थी, क्या इसकी नीतियाँ थीं, क्या पॉलिसी थी, क्या काम था और उसके बाद समय-समय पर इस देश के अंदर किस तरीके के कानून बने हैं, क्या नीतियाँ बनाई गईं, क्या पॉलिसीज बनाई गईं? जब आप संसद में इन सब चीजों का अध्ययन करेंगे, तो आपकी कार्य प्रणाली में और कार्य कुशलता आएगी।

हमें काननू का अध्ययन भी करना चाहिए, हमें कानून का ज्ञान भी होना चाहिए और उसके साथ-साथ व्यावहारिकता भी होनी चाहिए। हम कानून के आधार पर चलकर हमारे सारे सिस्टम को ब्रेक कर दें, वह भी ठीक नहीं है, इसलिए सस्टेनेबल डेवलपमेंट हमारे मन-मस्तिष्क का हिस्सा होना चाहिए।

हम किसी के कार्य में अवरोध भी पैदा न करें। इन दो चुनौतियों पर हमें लड़ना पड़ता है। जनप्रतिनिधि आपसे निश्चित रूप से चर्चा करेंगे और आप अपने कानून के हिसाब से चर्चा करेंगे। दोनों चीजें रहेंगी, लेकिन एक अच्छा अधिकारी वह होता है कि वह जिस ड्यूटी के लिए है, जो उसके कर्तव्य, दायित्व हैं, वह उन्हें भी निभाता रहे और सामान्य व्यक्ति, जो जंगल में रहता है, जंगल वर्षों से उसके जीवन का हिस्सा बन चुका है, उसकी लाइफ को, उसकी लाइफ स्टाइल में परिवर्तन करते हुए उसके लिए कैसे बेहतर जीवन प्रबंधन कर सकते हैं कि वह जंगल में रहकर अपनी आमदनी को बढ़ा सके और जंगल का संरक्षण भी कर सके।

अगर यह चीज उसके मस्तिष्क में आ जाएगी कि जंगल मेरी आजीविका का साधन है, मुझे जंगल को बचाना है तो आपके द्वारा बिना कानून का प्रयोग किए हुए जंगल भी बचेगा, जंगल बढ़ाने का

काम भी होगा और इसके साथ-साथ उसकी आजीविका को देकर आप उसका आर्थिक स्वावलंबन करने का काम भी करेंगे।

आप देख रहे होंगे कि धीरे-धीरे दुनिया के अंदर भारत के फॉरेस्ट के प्रोडक्ट्स की डिमांड बढ़ती जा रही है। हम फॉरेस्ट प्रोडक्ट को भी किस तरीके से इनक्रीज कर सकते हैं? आप नए अधिकारी हैं, आप नई रिसर्च करना जानते हैं, नए इनोवेशन हैं, आपकी नई सोच है। जंगल को बचाते हुए किस तरीके से फॉरेस्ट प्रोडक्ट्स को बढ़ाएं, उनका वैल्यू एडिशन करके, हम उन प्रोडक्ट्स को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाकर, उनकी पहचान बनाकर, उसे जंगल में रहने वाले व्यक्ति की आय का साधन बना सकें, यह भी हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

इसके साथ-साथ हमारी वाइल्ड लाइफ सेंचुरियाँ, जो विशेष रूप से पर्यटन का साधन बन चुकी हैं, उस वाइल्ड लाइफ सेंचुरी के अंदर भी हम किस तरीके से वहाँ रहने वाले लोगों को रोजगार देकर उनको आर्थिक रूप से मजबूत कर सकते हैं। नई तकनीक, नई वैज्ञानिक सोच, नए कुशल प्रबंधन से हम किस तरीके से उनके जीवन को बेहतर कर सकते हैं। अब नई-नई टेक्नोलॉजी आ गई है। पहले तो वह जमाना था, जंगल में कितने पेड़ लगे हैं, उन्हें गिना नहीं जा सकता था। अब नई टेक्नोलॉजी आ गई है, वहाँ कितने पेड़ लगाए गए, एक साल की क्या स्थिति है, दो साल की क्या हालत है, तीन साल के हालात क्या हैं, अब इसकी जानकारी आसानी से की जा सकती है। अब आप जंगल में जो पेड़ आदि लगाते हैं, अब टेक्नोलॉजी और सैटेलाइट सिस्टम के माध्यम से उनका संरक्षण कर सकते हैं।

हम प्रकृति को पूजते हैं। हम पेड़, सूर्य, पानी, जनवरों की पूजा करते हैं। हमारी जितनी भी आध्यात्मिक पुस्तकें हैं, उनमें अधिकतर में शेर के ऊपर माता रानी विराजमान होती हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं, जिससे कि व्यक्ति इनका संरक्षण करता रहे। पहले के समय लोगों की मानसिकता थी कि पेड़ों को न काटा जाए। इसे अगर धर्म से जोड़ दें, तो लोग पेड़ों को काटने से, जीवों को काटने से

रोकेंगे, क्योंकि ऐसा करने से पाप लगेगा। पशु-पक्षियों को दाना डालना, उन्हें पालना आदि हमारे जीवन का हिस्सा हैं, अत: भारत हमेशा प्रकृति संरक्षण के पक्ष में रहा है।

आप तीन दिनों तक यहां की लाइब्रेरी, रिसर्च विंग आदि का उपयोग करेंगे और यहां हुई विभिन्न चर्चाओं का अध्ययन भी करेंगे। मुझे लगता है कि इससे आपकी कार्यकुशलता और आपका वन प्रबंधन वैज्ञानिक दृष्टि से और बेहतर होगा।